Lecture-3

Topic-Features&Sources of Indian Political Thought

Degree-I (Hons.) Paper-2

Date-17-6-2021

By Rahul Kumar Jha
Dept.of Pol.Science

भारतीय राजनीतिक चिंतन की स्रोत & विशेषताएँ

अध्ययन के स्रोत :- प्राचीन भारत की राजनीतिक संस्थाओं और उनसे जुड़े चिंतन के अध्ययन के लिए अनेक स्रोतों से सहायता ली जा सकती है। इनमें वेद, ब्राह्मण ग्रंथ, उपनिषद्, पुराण, महाकाव्य (रामायण और महाभारत), स्मृतियां, बौद्ध साहित्य, जैन साहित्य, कौटिल्य का अर्थशास्त्र, कामंदक का नीतिसार, शुक्रनीति तथा इस साहित्यिक कृतियां विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

वेद, ब्राह्मण ग्रंथ और उपनिषद् :- ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद - ये चार वेद भारत के प्राचीनतम धार्मिक ग्रंथ माने जाते हैं। इन ग्रंथों में विभिन्न संदर्भों के अंतर्गत

राज्य एवं शासन की उत्पत्ति, शासन के स्वरूप, राजा की शक्तियाँ, राजा और मंत्री तथा राजा प्रजा के परस्पर संबंध का विवेचन भी देखने को मिलता है। सारे वेद प्राचीन भारतीय जीवन के बारे में विस्तृत जानकारी के स्रोत माने जाते हैं। अतः इनसे तत्कालीन राजनीति से संबंधित जानकारी भी प्राप्त की जा सकती है।

वैदिक मंत्रों और संहिताओं की गद्य टीकाएं ब्राह्मण ग्रंथों के रूप में प्रस्तुत की गई हैं। अतः वेदों की तरह ब्राह्मण ग्रंथों में भी राजनीतिक चिंतन के कुछ संकेत मिलते हैं। उदाहरण के लिए, 'शतपथ ब्राह्मण' के अंतर्गत इस तरह की पर्याप्त सामग्री प्राप्त होती है।

उपनिषदों में साधारणतः आध्यात्मिक ज्ञान का विस्तृत भंडार निहित है। परंतु इनमें प्रसंगवश राजनीतिक चिंतन के संकेत भी मिल जाते हैं। उदाहरण के लिए 'छांदोग्य उपनिषद्' में राजनीति को 'क्षत्र विद्या' की संज्ञा दी गई है, और उसका यथेष्ट विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

पुराण, महाकाव्य और स्मृतियां :-

पुराणों में साधारणतः देवी-देवताओं और विष्णु के अवतारों की कथाओं का रोचक विवरण धार्मिक श्रद्धा के साथ प्रस्तुत किया गया है। परंतु कुछ पुराणों में नंद वंश, मौर्य वंश और गुप्त वंश से जुड़े ऐतिहासिक चरित्रों का स्रोत भी मिलता है। इनमें अनेक महत्वपूर्ण राजनीतिक विचार गुंथे हुए हैं।

महाकाव्यों की परंपरा में महर्षि वाल्मीकि कृत रामायण और महर्षि वेदव्यास कृत महाभारत सबसे महत्वपूर्ण हैं। रामायण में मर्यादा-पुरुषोत्तम राम का विस्तृत चरित्र-चित्रण मिलता है। महाभारत में कौरवों और पांडवों के परस्पर विवाद और उनके परस्पर विनाशकारी युद्ध का भव्य विवरण दिया गया है। इसमें योगिराज भगवान कृष्ण की भूमिका पर भी प्रकाश डाला गया है। महाभारत के 'शांतिपर्व' में वर्णित राजधर्म अनूठा है।

[CHAPTER CONTINUES...]